16

जी होता चिड़िया बन जाऊँ

पाठ परिचय – प्रस्तुत कविता कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी जी द्वारा रचित है। इसमें कवि स्वयं चिड़िया बनने की इच्छा का वर्णन करते हैं। कवि चिड़िया की तरह स्वतंत्र होकर मन चाहे स्थान पर जाना चाहते हैं तथा हरी-भरी डालियों पर बैठकर स्वादिष्ट फल खाना चाहते हैं।

1. व्याकरणिक परिचय–

(क) दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

तरु – .... जंगल – ....

स्वतंत्र – .... विचरना – ....

नभ – ....

(ख) दिए गए शब्दों के तुक मिलाकर शब्द लिखिए–

जंगल – ..... सुख – .....

डाली – ..... बंधन – .....

जग – .....

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए।

.....

(ख) कौन चिड़िया बनकर क्या पाना चाहता है?

.....

(ग) कवि चिड़िया बनकर कहाँ फुदकना चाहता है?

.....

(घ) चिड़िया का जीवन कैसा है?

.....

(ङ) कवि चिड़िया का जीवन क्यों पाना चाहता है?

.....

3. दिए गए वाक्यों में सही पर (✓) या (✗) का निशान लगाइए–

(क) कवि चिड़िया बनना चाहते हैं। ☐

(ख) कवि तने के खोखल में रहना चाहते हैं। ☐

(ग) वह महलों की सैर करना चाहते हैं। ☐

(घ) कवि घाटी और पर्वत की सैर करना चाहते हैं। ☐

(ङ) चिड़िया का जीवन स्वतंत्र होता है। ☐

4. आओ सीखें–

(क) सभी 'नाम' शब्द संज्ञा कहलाते हैं। जैसे राजा, नगर, मेज, घर, गाँव, चिड़िया आदि।

(ख) कविता में आए पाँच नाम शब्द लिखिए–

....

5. रचनात्मक गतिविधि–

(क) कविता याद करके दिए गए स्थान पर लिखिए।

.....

.....

.....

(ख) मोर का चित्र चिपकाइए।